गाय की सुरक्षा : राष्ट्र सुरक्षा

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जड़ और चेतन से मिलकर प्रकृति का निर्माण हुआ है। प्रकृति में जितने भी पदार्थ हैं, सबका अपना–अपना महत्व है। सभी वस्तुएं प्रकृति की पोषक है। यहां पर पशु–पक्षी, दानव, मानव, नदी, पहाड़, झरने, सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी सभी पदार्थ पंचतत्वों से मिलकर बने हुए है। इस संस्कृति में प्रकृति की पूजा की जाती है। वैदिक काल से लेकर आजतक यह परम्परा बनी हुई है। हमारी संस्कृति में गायों को माता का दर्जा दिया गया है और गौ माता के नाम से गाय की पूजा होती है। गाय का एक पवित्र पशु माना जाता है। इसलिए गाय का पालन और संरक्षण सभी भारतीयों का कर्त्तव्य है। गाय का अनेक दृष्टियों से महत्व है। गावों में जल, जमीन और गाय का होना आवश्यक है। गाय से निर्मित पंचगव्य जीवन और धार्मिक कार्यों में उपयोगी होता है। गाय के बछड़े और बछड़ी दोनों उपयोगी है। गाय के शरीर में तैतीस करोड़ देवी और देवताओं को निवास माना जाता है। वेद, उपनिषद्, स्मृतियां सभी ग्रंथों में गौ मूत्र और गाय को महत्व दिया गया है। गाय का मूत्र घर को पवित्र कर देता है। गाय का दूध बल और बुद्धिवर्धक होता है। इसका दूध सुपाच्य और शरीर के लिए आवश्यक है। बच्चे के जन्म के समय गाय के दूध का फाहा बच्चों को दिया जाता है। दूध से दही, घी, मावा आदि खाद्य पदार्थ बनते है। इसका गाय का दूध शरीर की कोशिकाओं को शक्ति प्रदान करने वाला होता है। शरीर में नयी ऊर्जा का संचार करता है। आजकल शहरों और गावों में नयी–नयी बीमारियां फैल रही है। इसका मुख्य कारण यह है कि शुद्ध हवा, शुद्ध दूध, शुद्ध पानी पीने के लिए उपलब्ध नहीं हो रहा है। शरीर की क्षमता धीरे–धीरे कम होती जा रही है, अवरोधक शक्ति घटती जा रही है। जिसके कारण कीटाणुओं के प्रभाव को शरीर नहीं झेल पाता और शरीर रुग्ण हो जाता है। पहले बीमारियां कम होती थी। इसका कारण था कि गाय का दूध, दही मानव शरीर को इतना ह्रष्ट और पुष्ट बना देता था, जिससे शरीर की क्षमता बढ़ती थी और रोग नहीं होता था। अतः गाय की सुरक्षा आज की आवश्यकता है। गौ पालन, गौशाला, गौ सरंक्षण को सरकार बढ़ावा दे रही है। कुछ प्रदेशों में गौर संरक्षण मंत्रालय भी

कार्य करने लगा है। गायों को कत्लखानों में ले जाकर गायों की हत्या की जाती है। उनके मांस और चर्बी को निर्यात किया जाता है। इस पर पूर्ण प्रतिबंध होना चाहिए। गौ माता दूध और दही के लिए है न कि उनको कत्लखाने में भेजकर उनकी हत्या करायी जाये। गायों की संख्या बढ़ेगी तो राष्ट्र की उन्नति होगी। पूरे भारत में बड़ी–बड़ी गौशालायें खोलकरके देशी नस्ल की गायों को रखकर उनकी वंशवृद्धि करायी जा रही है। इसके माध्यम से गायों का संरक्षण हो रहा है। आजादी के बाद से सरकार की गतल नीतियों के कारण भारतीय नस्ल के गौ वंश पर खतरा मंडराने लगा है। यह हमारे लिए चिंता का विषय है। गौ रक्षा के बिना राष्ट्रीय सुरक्षा सम्भव नहीं है। अनेक स्वयंसेवी संस्थाएं यह मांग कर रही है कि गौवंश की सुरक्षा के लिए कानून बनाया जाये। गौसेवा और गौसरंक्षण अर्थव्यवस्था पर्यावरण समेत व्यापक सन्दर्भ वाला विषय है। गंगा और गाय की सुरक्षा समय की मांग है। गौदूग्ध इस पृथ्वी पर अमृत है। इस दूध से ही इतने पदार्थ तैयार किये जाते हैं जिनका सेवन शरीर के लिए बहुत ही लाभप्रद होता है। बैलों से खेती करने तथा बोझा ढ़ोने का काम लिया जाता है। गोबर तथा गौमूत्र वैज्ञानिकों द्वारा सर्वोत्तम खाद्य घोषित किये गये है। हिन्दू समाज की मान्यता है कि जब मनुष्य की मृत्यु होती है तो उसके बाद गाय उसको वैतरणी पार कराती है। मनुष्य को उसके जीवन में ही संसार सागर को पार करने में जितनी सहायता गाय करती है, उतना और कीसी भी प्राणी से सहयोग नहीं मिलता। वेदों में गाय को अवन्ध्या कहा गया है। अवन्ध्या का अर्थ है जो न मारी जाये। गाय की सेवा सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाली होती है। गाय की सेवा करके महाराज दिलीप को पूत्र की प्राप्ति हुई थी। महाराज दिलीप भगवान् राम के पूर्वज है। उनके कुलगुरु महर्षि वशीष्ठ ने महाराज दिलीप को नन्दिनी की सेवा करने का उपदेश दिया था। गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य करके राजा दिलीप ने नन्दिनी की सेवा की। सेवा से प्रसन्न होकर नन्दिनी ने पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया। इससे यह स्पष्ट होता है कि गौ सेवा सभी प्रकार के मनोरथों को पूर्ण करती है। हिन्दू संगठनों ने हमेशा से गौ रक्षा के लिए अपनी आवाज उठायी है। लेकिन इसकी आड़ में कट्टरपंथी कुछ लोगों ने अनुचित साधनों का भी प्रयोग किया है। गौ सुरक्षा अच्छी बात है, किन्तु इसके पीछे राजनीति नहीं होनी चाहिए। गौ रक्षा से जुड़े हुये संगठनों ने गौ सुरक्षा को एक बहुत बड़ा मुद्दा बना दिया है। गौ सुरक्षा के

लिए गौशालाओं का निर्माण एक बहुत अच्छा कदम है। इन गौशालाओं में गायों को सुरक्षित रखकरके उनका संवर्धन किया जा रहा है। गौशालाओं की सुरक्षा में सभी की भागेदारी होनी चाहिए। केवल जिन्होंने गौशालाओं का निर्माण किया है, उन्हीं के द्वारा यह कार्य नहीं होना चाहिए, बल्कि आस–पास के जितने भी लोग है, उन सभी को गौ संरक्षण और संवर्धन के लिए कार्य करना चाहिए। यथाशक्ति गायों के खाने–पीने, रहने के लिए जो भी सहयोग हो सके करना चाहिए। गौशालाओं में धार्मिक कृत्यों का आयोजन कर लोगों को गौशालाओं की तरफ आकर्षित करना चाहिए। गौशालाओं की उपलब्धियों का व्याख्यान भी होना चाहिए।

इन सब माध्यमों से गाय का संरक्षण और संवर्धन करके राष्ट्रहित को बढ़ावा देना चाहिए।